गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2018-2020

मासिक गोलालारीय दर्शन

सफलता के 11 वर्ष

लेट पोस्टिंग

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com
9406744064

गुरुदेव विशेषांक

अपनों के साथ अपनी बातें

सेवा में,

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 11 अंक : 5 पृष्ठ संख्या : 10 माह – 15 मार्च 2020 सहयोग राशी 1100/– देकर सदस्य बनें ।

विश्व में प्रथम बार तेरह जिनालयों के ऐतिहासिक पंचकल्याणक संपन्न

अनुपमा जैन, इन्दौर । आचार्यश्री के सानिध्य में इन्दौर नगर एक साथ 13 जिनालयों के पंचकल्याणक के स्वर्ण अवसर का साक्षी बना । 26 जनवरी से 1 फरवरी तक पाषाण से भगवान बनाने के इस महान पुण्य कार्य में नगर और आसपास से ही नहीं, देश के सुदूरवर्ती भागों से भी लाखों धर्मावलंबियों ने अपनी सहभागिता दर्ज की । स्वयं आचार्यश्री भी इस ऐतिहासिक पंचकल्याणक में अपना सान्निध्य देने के लिए गदगद थे । आचार्यश्री के सानिध्य का ही प्रभाव था कि न केवल के नवीन जिनालयों और पूर्व जिनालयों के साथ ही देश भर के विभिन्न मंदिरों के लिए भी हजारों श्रद्धालु प्रतिमाओं को लेकर इस महामहोत्सव में शामिल हुए।

गोयल नगर के चमेली देवी पार्क में इसके लिए विशाल और भव्य पांडाल तैयार किया गया । दयोदय चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस समारोह का भव्य शुभारंभ 26 जनवरी को कनाड़िया रोड़ स्थित नवनिर्मित जैन मंदिर से चमेली पार्क तक विशाल शोभायात्रा से हुआ, जिसमें हजारों नर नारी गाजे बाजे के साथ चल रहे थे । पंचकल्याणक के मुख्य पात्र, भगवान के माता पिता, सौधर्म इन्द्र, कुबेर, यज्ञनायक इत्यादि भी रथों पर आसीन थे । आचार्य श्री भी अपने शिष्यों सहित जुलूस में सम्मिलित हुए । चमेली पार्क पहुंचकर शोभायात्रा का समापन हुआ । यहां इस महामहोत्सव का प्रथम चरण अर्थात ध्वजारोहण पूर्ण हुआ । प्रतिभा स्थली की छात्राओं द्वारा भारत की महान ऐतिहासिक और सांस्कृतिक, विरासत को दर्शाती सारगर्भित और मार्मिक प्रस्तुतियां दी गई, तत्पश्चात गुरुदेव का मंगल उद्बोधन हुआ ।

27 जनवरी से पंचकल्याणक की मुख्य क्रियाएं आरंभ हुई । लगभग 5000 से अधिक इन्द्र इन्द्राणियों के साथ प्रात: श्रीजी का अभिषेक और शांतिधारा के बाद पात्र शुद्धि, सकलीकरण, नित्य नियम पूजन की गई । दिन में याग मंडल विधान किया गया। शाम को मंगल आरती के बाद गर्भ कल्याणक की पूर्ववर्ती क्रियाओं में इन्द्रसभा, अष्ट देवियों द्वारा माता मरुदेवी की चर्या, सोलह स्वप्नों का मंचन किया गया ।

अगले दिन उत्तर गर्भ कल्याणक में महाराज नाभिराय का दरबार लगा । स्वप्न फल, अष्टदेवियों द्वारा माता की सेवा, छप्पन कुमारियों द्वारा माता को भेंट दी गई । माता की गोद भराई का आयोजन किया गया । जन्म कल्याणक महोत्सव में भगवान के जन्म की घोषणा होते ही सौधर्म इन्द्र द्वारा कुबेर और अन्य इन्द्रों के साथ सपरिवार अयोध्या नगर आगमन हुआ । यहां शचि इन्द्राणी माता के प्रसूति कक्ष से शिशु बालक को उठाकर उनके पास मायामयी बालक को सुला देती है । सौधर्म इन्द्र ऐरावत हाथी पर आदिकुमार को लेकर पांडुक शिला पर ले जाते है, जहां 1008 कलशों द्वारा प्रभु बालक का जन्माभिषेक होता है । जन्माभिषेक की विशाल शोभायात्रा चमेली पार्क से कनाड़िया रोड स्थित जिनालय तक निकाली गई जिसमें अनेक बैंडबाजे के साथ रथ और बग्गियों में इन्द्र, कुबेर, यज्ञनायक आदि अपने परिवारों के साथ विराजमान थे ।

तप कल्याणक में आदिकुमार का राज्याभिषेक हुआ । महाराज के कार्यकाल में प्रजा असि, मसि, कृषि द्वारा जीवन यापन की शिक्षा दी गई । ब्राह्मी और सुंदरी को शिक्षा और लिपि का ज्ञान कराया गया । नीलांजना नृत्य द्वारा महाराज आदिकुमार को वैराग्य हुआ ।

ज्ञान कल्याणक के दिन मुनि ऋषभसागरजी की आहारचर्या की गई । इसमें श्रेयांस राजा और सोमप्रभ ने ऋषभसागर महाराज को इक्षु रस का आहार दिया । दोपहर को भगवान को केवल ज्ञान की प्राप्ति होते ही इन्द्रों द्वारा समवशरण की रचना की गई और आचार्य श्री ने समवशरण में विराजमान होकर धर्मोपदेश दिया । आचार्यश्री ने जिन प्रतिमाओं को सूरी मंत्र द्वारा अभिमंत्रित किया।

अंतिम दिन प्रात:काल प्रभु मोक्ष गमन कर मुक्ति को प्राप्त हुए । दोपहर में तेरह जिनालयों की गजरथ फेरी आरंभ हुई । इसमें सबसे आगे स्वर्ण रथ चल रहा था, उसके पीछे सौधर्म इन्द्र और क्रमशः सभी मुख्य पात्र रथों में सपरिवार चल रहे थे । बाहर से आये अनेक बैंड भी अपनी अपनी विशेष धुनों से सबका मन मोह रहे थे । आचार्यश्री ससंघ पूरे समय फेरी में परिक्रमा कर रहे थे । उनके पीछे ब्रह्मचारीगण, बहनें, प्रतिभा स्थली की छात्राएं और अपार जन समूह था । गजरथ फेरी के पश्चात ग्यारह प्रतिमाओं को एक साथ महामस्तकाभिषेक किया गया । इसके पश्चात सभी जिन प्रतिमाओं को उनके यथेष्ठ जिनालयों में प्रतिष्ठापित किया गया । मुख्य पात्रों के सम्मान और उन्हें नई उपाधियों से विभूषित किया गया ।

पात्र चयन के पश्चात आचार्यश्री ने तिलक नगर में आयोजित धर्मसभा में कहा कि जब कोई यात्री टिकट लेकर गाड़ी में बैठता है तो उसका टिकट चेक करके उसे निर्विकल्प यात्री घोषित कर दिया जाता है । आप सभी ने पंचकल्याणक महोत्सव का टिकट खरीद लिया । अब आप सभी को निर्विकल्प कर दिया गया है, ताकि अच्छे से अच्छे भाव उत्पन्न कर सको । हम सब भी पाषाण से भगवान बनने वाले महोत्सव के सुपात्र बनें । आचार्यश्री ने कहा कि महोत्सव में कुछ तो खुद बोली लेकर पात्र बन गए । कुछ दूसरों को देखकर और कुछ लोगों को समझाकर पात्र बना दिया गया । जैसे दो बैलों पर किसान जुआरी रख देता है, ताकि वह मिलकर काम कर सकें । वह इधर उधर नहीं भाग सकते, वैसे ही आप लोगों को जिम्मेदारी दे दी गई है । अब आप लोग भी इधर उधर कहीं भाग नहीं सकते । विवाह में पिताजी को आने जाने की छूट रहती है, लेकिन जिसका विवाह है, वह अब कहीं नहीं जाएगा ।

पूरे कार्यक्रम के दिनों में उपस्थित इन्द्र इन्द्राणियों, मुख्य पात्रों और अन्य दर्शनार्थियों के लिए दोनों समय शुद्ध व सुस्वादु भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था दयोदय ट्रस्ट द्वारा की गई । इस प्रकार इन्दौर नगर के इतिहास में 'न भूतो न भविष्यति' ऐसे महान पंचकल्याणक का समापन हुआ ।